उपसंहार Conclusion

भारतीय संगीत के तन्त्री वाद्यों का इतिहास व वादन परम्परा समृद्ध होने के बावजूद व्हायोलिन जैसे विदेशी वाद्य ने भारतीय संगीत में अपना जो विशिष्ट व लोकप्रिय स्थान बनाया है, वह अन्य किसी विदेशी वाद्य ने नहीं। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशेषत: वाद्य-संगीत की समृद्ध परम्परा बंगाल में अधिक दिखाई देती है। स्वतन्त्र ब्रिटिश राज की स्थापना बंगाल से शुरू हुई। सन् 1757 में नवाब सिराजउद्दौला के राज्यकाल में अंग्रेजों ने अपनी व्यापारिक तथा सामरिक शक्ति काफी बढ़ा ली थी। नवाब को पराजित करके उन्होंने बंगाल में अपनी सत्ता स्थापित की। तत्पश्चात् धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत पर ब्रिटिश राज स्थापित कर लिया। ब्रिटिश राज की नींव बंगाल में डाली जाने के कारण अंग्रेज़ों के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध सर्वप्रथम बंगाल प्रदेश में स्थापित हुई। अंग्रेज़ों के साथ लाये गए अनेक वाद्यों के साथ व्हायोलिन भी बंगाल में उपस्थित हुआ।

बंगाल के सांगीतिक गतिविधियों में अन्य भारतीय वाद्य यन्त्र के साथ इस वाद्य का भी प्रयोग आरम्भ हुआ। बंगाल के संगीत प्रेमियों व कलाकारों ने इस नए वाद्य के प्रति रूचि रखने लगे। आगे चलकर व्हायोलिन ने बंगाल में अपनी लोकप्रियता बढ़ाते हुए यात्रा जारी रखी एवं क्रमशः अन्य भारतीय शास्त्रीय वाद्यों के समान, सम्मान प्राप्त कर संगीत के सभी क्षेत्रों में प्रयोग होने लगे। अतः व्हायोलिन इस अंग्रेज़ी नाम की जगह 'बेहाला' नाम प्रचलित हुआ। तत्पश्चात् बेहाला का 'हा' अक्षर लुप्त होकर 'बेला' यह नाम सम्पूर्ण भारत में सर्वमान्य हो गया।

18वीं सदी के उत्तरार्ध में बंगाल की राजनैतिक परिस्थिति सम्पूर्ण रूप से विरोधाभासपूर्ण थी। ब्रिटिश राज-शक्ति के विरूद्ध बंगाली जाति का विद्रूपपूर्ण मनोभाव का परिचय मिलता है। परवर्ती में अंग्रेज़ों के विविध प्रकार के अनैतिक कार्यक्रमों के विरूद्ध बंगाली जाति ने सर उँचा कर प्रतिवाद शुरू किया। तत्पश्चात् राजनैतिक विरोधाभास को सुधारने तथा देश से ब्रिटिश राज-शक्ति को हटाने के लिए सुधारकों का आविर्भाव होने लगा। उनमें बंगाल के अनेक कवि-संगीतकार भी शामिल थे, जिन्होंने अपनी-अपनी रचनाओं के माध्यम से देश की परिस्थिति को सर्वसाधारण तक पहुँचाने की तथा उनमें देश-भक्ति का भाव जागृत करने का प्रयास किया। सुधारकों ने यह प्रयास सिर्फ बंगाल के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत के लिए भी किया था। दूसरी ओर पाश्चात्य देशों की आधुनिक संस्कृति के साथ परिचित होने के बाद बंगाल में एक नई चेतना का उद्भव हुआ। उस काल में बंगाल

की समाज-संस्कृति कू-प्रथाओं तथा कू-संस्कारों से भरा हुआ था। पश्चिमी जातियों के भारत विजय से भारतीय समाज के दोष-गुण तथा पतन का रूप स्पष्ट होने लगा। देश की चिन्तनशील मनीषीगण अपने समाज के दोषों के विवेचन के साथ-साथ सभी समस्याओं से समाज की रक्षा करने के उपाय ढूँढ़ने लगे। उन्हें यह अनुभव हुआ था कि पाश्चात्य जगत की आधुनिक भावधारा की सहायता से ही भारत की दूर्दशापूर्ण सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति का पूनर्जीवन हो सकता है। अतः इन परिस्थितियों से देश और समाज की रक्षा करना तथा संगीत में सुधार लाने की आवश्यकता दिखाई दी थी। इस आवश्यकता को सोचते हुए सुधारकों ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रयास जारी रखा। उस समय संगीत आमोद-प्रमोद तथा विलास का मुख्य वस्तु बन गया था। शिक्षित जन-समाज में संगीत के प्रति नफरत पैदा हो गई थी। इस सांगीतिक परिस्थिति को सुधारने में बंगाल के अनेक संगीत मनीषियों ने योगदान दिया। उन्होंने इस परिस्थिति का केवल सुधार ही नहीं की बल्कि संगीत को बंगाल के घर-घर में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उनका संगीत, बंगाल की संस्कृति और मिट्टी से जुड़ा हुआ था। आज तक उनका संगीत बंगाल के घर-घर में बसा हुआ है। संगीत मनीषियों के इस प्रयास से लोगों में सांगीतिक रूचि का उदय हुआ।

उस समय बंगाल में पाश्चात्य संस्कृति का भी ज़ोर से विस्तार आरम्भ हुआ था। लोगों में देशी तथा विदेशी दोनों ही संस्कृति को अपनाने की मानसिकता दिखाई देने लगी। इस मानसिकता का प्रबल प्रभाव संस्कृति के अन्य क्षेत्रों के समान संगीत-क्षेत्र में भी पड़ा। लोग देशी संगीत के साथ-साथ विदेशी संगीत में भी रूचि रखने लगे। उस समय अंग्रेज़ों के साथ बंगाल में अनेक आकर्षक पाश्चात्य वाद्यों का आगमन हुआ था। लोगों में उन वाद्यों को अपनाने की आकांक्षा दिखाई देने लगी। उस समय पाश्चात्य वाद्यों में मुख्य तथा अधिक आकर्षक वाद्य था व्हायोलिन, जो आज भी लोकप्रियता के शिखर पर है। लोगों ने इस नए वाद्य के प्रति सर्वाधिक रूचि रखना शुरू किया। परन्तु कोई भी व्यक्ति अपना स्वभाव, रहन-सहन, अपनी आदतें, अपनी पारिवारिक, सामाजिक परम्परा आदि को एकाएकी बदल नहीं सकता। उन्हें कुछ कालखण्ड की आवश्यकता होती है। इस प्रकार वाद्य-संगीत के क्षेत्र में भी भारतीय परम्परा के वाद्यों में व्हायोलिन की स्थापना होने में कुछ कालखण्ड व्यतीत होना स्वाभाविक था। पाश्चात्य विभिन्न प्रकार के वाद्यों में व्हायोलिन यह एक ही वाद्य है जो भारतीय संगीत के साथ घनिष्ठ रिश्ता स्थापित करने में समर्थ हुआ। विदेशी वाद्य होकर भी

व्हायोलिन · भारतीय संगीत में अपने लिए एक गौरवपूर्ण स्थान बनाकर आगे चलते जा रहा है, जहाँ और भी अनेक देशी-विदेशी वाद्यों का प्रचलन भारत में है। इसलिए व्हायोलिन तथा अन्य वाद्यों के प्रति भिन्न-भिन्न व्यक्ति तथा कलाकारों का अलग-अलग दृष्टिकोण यहाँ पाया जाता है।

भारतीय संगीत भारत की शिल्प संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। अति प्राचीन काल से सभ्यता के क्रमिक विकास के साथ-साथ भारतीय संगीत का भी विवर्तन तथा विकास हुआ। भारतीय संगीत के इतिहास के पर्यवेक्षण द्वारा इस विवर्तन तथा विकास का चित्र स्पष्ट होता है। संगीत के इस विकास के पीछे प्राचीन काल से विभिन्न महत्त्वपूर्ण युगों का तथा संगीत मनीषियों का विशेष योगदान रहा। भिन्न-भिन्न युगों में परिवर्तित तथा मिश्रित होते हुए भारतीय संगीत आज की इस परिष्कृत अवस्था में पहुँचा। मुस्लिम शासन काल से पहले सम्पूर्ण भारत में एक अखण्ड संगीत-धारा प्रचलित थी। उसके बाद ईरानी संगीत के मिश्रण से उत्तर भारत में एक नई परम्परा खड़ी हुई। फलतः भारतीय संगीत 'उत्तर' और 'दक्षिण' यह दो धाराओं में विभक्त हो गया। संगीत की ये दो धाराएँ अलग-अलग अपना विकास करने लगी। मुगल काल में युरोपियों व्यापारियों द्वारा व्हायोलिन का आगमन सर्वप्रथम दक्षिण भारत में हुआ। इसलिए दक्षिण के कलाकारों ने इस वाद्य को पहले अपनाया और इसमें भारतीय संगीत का प्रयोग आरम्भ किया। इसलिए इस वाद्य का सर्वप्रथम क्रियात्मक प्रयोग तथा विकास का श्रेय दक्षिण भारत के कलाकारों को दिया जाता है।

दक्षिण भारत के बाद जब उत्तर भारत में इस वाद्य का आगमन हुआ तब उत्तर भारत के अन्य प्रदेशों के समान बंगाल के कलाकारों ने भी इस नए वाद्य में रूचि रखना शुरू किया। दक्षिण के कलाकारों ने प्रारम्भ से ही व्हायोलिन की पाश्चात्य शैली को अस्वीकार कर भारतीय पद्धति में तथा गायकी शैली से वादन आरम्भ किया। बंगाल में शुरू-शुरू में पाश्चात्य पद्धति से ही इसका वादन किया जाता रहा। तत्पश्चात् भारतीय पद्धति को अपनाकर इसमें गत्कारी तथा तन्त्रकारी शैली से वादन शुरू हुआ। सामान्य रूप से तन्त्रकारी के साथ गायकी का मिश्रण भी किया जाता रहा। भारतीय संगीत में तन्त्रीवाद्यों की समृद्ध परम्परा बंगाल प्रान्त में बहुत पहले से ही रही। इसलिए वहाँ गत्कारी या तन्त्रकारी अंग का प्रभाव अधिक है। व्हायोलिन पर गत् शैली को पूर्णता प्राप्त करवाने के लिए चार तार के स्थान पर पाँच तारवाले

व्हायोलिन का उपयोग बंगाल के व्हायोलिन वादक करते है और इसलिए वहाँ पाँच तारवाले व्हायोलिन के निर्माता भी काफी है।

गत्कारी या तन्त्रकारी शैली का प्रभाव अधिक होते हुए भी बंगाल का प्रतिष्ठित व्हायोलिन वादकगण अलग-अलग शैलियों से अपना वादन करते है। प्रवीण कलाकारगण ज्यादातर गत् शैली से ही वादन करते थे, परन्तु नए वादक कलाकारों को गत् शैली के साथ गायकी शैली के मिश्रण से भी वादन प्रस्तुत करते हुए देखा जाता है।

ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेज़ों के साथ बंगाल मे अनेक पाश्चात्य वाद्यों का आगमन हुआ, जैसे - पियानो, गिटार, क्लैरोनेट, व्हायोलिन आदि। इनमें व्हायोलिन ही एकमात्र वाद्य हुआ, जिसमें भारतीय संगीत की सभी विधाओं को प्रकट किया जा सके। बंगाल में व्हायोलिन की उपस्थिति के समय विभिन्न प्रकार के प्रहार वाद्य तथा गज़ वाद्य का उपयोग होता था। इनमें शास्त्रीय वादन-क्षेत्र में सितार, सरोद, सुरबहार, सुरसिंगार, इसराज, सारंगी, दिलरूबा आदि वाद्य का मुख्य प्रयोग होता था। इन वाद्यों की सृष्टि का इतिहास भी काफी विचित्र है। सभी वाद्यों के उत्पत्ति विषयक भिन्न-भिन्न मत विद्यमान है। इन भारतीय परम्परागत वाद्यों का अनेक घरानेदार कलाकार उस काल बंगाल में मौजूद थे। फिर भी व्हायोलिन नामक यह विदेशी वाद्य भारतीय संगीत में उपयुक्त सिद्ध होने के पश्चात् इसका भी सफल प्रयोग शुरू हुआ। न केवल शास्त्रीय संगीत में बल्कि संगीत के अन्य सभी क्षेत्रों में धीरे-धीरे इस वाद्य ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। आज बंगाल में संगीत के सभी क्षेत्रों में इस वाद्य का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

भारतीय संगीत का मूल तत्त्व है 'राग'। रागों के द्वारा ही भारतीय संगीत का मूल सौन्दर्य प्रस्फुटित होता है। चाहे कण्ठ-संगीत हो या वाद्य-संगीत, ध्वनि की सूक्ष्मता के साथ जब कलाकार की शिक्षा, प्रतिभा और व्याकरण का प्रयोग उचित रूप से होता है, तो सौन्दर्यानुभूति का प्रकाश मिलता है। दूसरों को हर्ष प्रदान करने के उद्देश्य से शास्त्रीय संगीत की विशेषताओं के साथ जब कलाकार अपना समृद्धिपूर्ण वादन प्रस्तुत करता है तब सहृदय श्रोताओं को भी कलाकार की मानसिक स्थिति के समान भावानुभूति होती है। यद्यपि व्हायोलिन में भारतीय संगीत की सभी विशेषताओं को प्रकट किया जाना सम्भव है। अतः भारतीय शास्त्रीय वाद्य-संगीत के किसी भी वाद्य के समान व्हायोलिन में भी वादक कलाकारों को वाद्य-संगीत की सभी तकनीकों की जानकारी और निपूणता होना आवश्यक है, क्योंकि वादक की समृद्ध वादन प्रस्तुती से ही एक सौन्दर्यपूर्ण वातावरण पैदा हो सकता है।